चन्द्रगुप्त-I के शासन काल तक गुप्त साम्राज्य के उत्थान एवम् विकास का वर्णन।

समुद्र गुप्त के प्रयाग प्रशस्ति के साथ-साथ कुछ अन्य अभिलेखों समेत साहित्यिक स्रोतों से भी गुप्तों के प्रारम्भिक इतिहास के बारे में विशेष रूप से जानकारी मिलती है।

महाराज गुप्त द्वारा 275 ई० के लगभग गुप्त वंश की स्थापना की गई। भारतीय स्रोतों में गुप्त वंश के संस्थापक का नाम महाराज गुप्त मिलता है जबकि चीनी यात्री इत्सिंग संस्थापक का नाम श्रीगुप्त बताते हैं इसका कोई लेख या सिक्का प्राप्त नहीं होता है। इसके कुछ मुहरें प्राप्त होती है जिसपर गुप्तस्य एक दूसरे पर श्रीगुप्तस्य लेख अंकित है। पुराणों के विवरण के आधार पर कुछ इतिहासविद् श्रीगुप्त का राज्य पश्चिम में प्रयाग और साकेत के आस पास के क्षेत्रों पर तथा पूरब में मगध की ओर भी कुछ दूर तक विस्तृत था। इसका शासनकाल लगभग: 275 ई० से 300 ई० तक माना जाता है।

गुप्त वंश का दूसरा शासक श्रीगुप्त (300-319 ई०) का पुत्र महाराज घटोत्कच था। प्रभावती गुप्ता के पूना एवम् रिद्धपुर ताम्रपत्र तथा स्कंदगुप्त के ~~सुपिया~~

सुपिया (सीवा) के लेख भी गुप्तों के वंशावली में घटोत्कच को संस्थापक राजा के रूप में बताया गया है और कहा गया है कि गुप्त उनके आदि पुरुष थे इसलिए उनके सम्मान में इस वंश का नामाकरण गुप्तवंश किया गया। लेकिन कुछ गुप्त अभिलेखों में श्रीगुप्त को ही गुप्त वंश का संस्थापक राजा कहा गया है इससे ऐसा प्रतित होता है कि यद्यपि गुप्त वंश की स्थापना श्रीगुप्त ने की होगी लेकिन इस समय गुप्त वंश महत्वपूर्ण स्थिति में नहीं होगा और घटोत्कच के काल में उपयुक्त स्थानों पर राजनीतिक सत्ता स्थापित की होगी। साथ ही साथ लिच्छवियों के साथ भी इसी के समय वैवाहिक संबंध स्थापित हुआ होगा। अर्थात तत्कालीन समय में इनके कार्यकाल में सर्वाधिक साम्राज्य का विकास हुआ होगा इसलिए कहीं-कहीं घटोत्कच को गुप्त वंश का संस्थापक के रूप में प्रस्तुत करता है घटोत्कच के भी कोई लेख या सिक्के नहीं मिलते हैं इन दोनों प्रारम्भिक शासक के बारे में विशेष रूप से कोई जानकारी नहीं मिलती

है। इन दोनों राजा के नाम के पूर्व महाराज की उपाधि इस बात की ओर इशारा करता है कि प्रारम्भिक दोनों राजा किसी राजवंश के ~~आधिन~~ अधीन एक सामंत के रूप में शासन करते थे। इसलिए इन लोग महाराज की उपाधि धारण करते थे। गुप्त शासक भी अपने सामंतों को महाराज की उपाधि दिया करता था। इससे भी पुष्टि होता है कि गुप्त वंश के दोनों प्रारम्भिक राजा सामंत के रूप में शासन कर रहे थे। के० पी० जायसवाल साहब का कहना है कि गुप्तों के पूर्वज मगध पर लिच्छवियों का अधिकार था और वे उन्हीं के ~~शासक~~ थे सामंत थे जबकि फ्लीट और बनर्जी साहब का विचार है कि वे शकों के सामंत थे जो तीसरी शताब्दी ई० में उसकी अधिनता से मुक्त हो ~~अपना~~ का स्वतंत्र राज्य की स्थापना की। जो भी हो लेकिन इस वंश के तीसरे शासक चन्द्र गुप्त प्रथम महाराजाधिराज की उपाधि धारण की। इससे ऐसा लगता है कि प्रारम्भिक दोनों राजा किसी साम्राज्य के ~~आधिन~~ अधीन सामंत के रूप में शासन कर रहे थे और चन्द्र गुप्त प्रथम वह पहला राजा था जो इन सामंती दासता के जुआ को निकाल फेंका और अपने आप को एक राजा के रूप में स्थापित किया

व्याख्यान जारी/continue